तालीम इनके पास थी। महाराज खेतड़ी इनके वादन से इतने प्रभावित हुए कि इनके शिष्य बन गये। महाराज अलवर ने इनके वादन से खुश होकर इन्हें एक गांव पुरस्कार स्वरूप दे दिया था नवाब रामपुर भी इनके वादन से बहुत प्रभावित थे। उस समय के सबसे बड़े वीणा वादक उ. वजीर खां ने रामपुर दरबार में इनका वीणा वादन संपन्न होने के बाद वीणा बजाने से इनकार कर दिया था। जबकि, उम्र, अनुभव और प्रतिष्ठा - तीनों में वजीर खां मुशर्रफ खां से वरिष्ठ थे। मुशर्रफ खां रंग रूप में बहुत आकर्षक थे... अच्छे कपड़े पहनने और अच्छे भोजन का शौक था उन्हें। उन्होंने दूसरे देशों की भी सांगीतिक यात्रा की थी... यूरोप भी गये थे। इनका निधन 1909 में हुआ।

मुशर्रफ खां के दोनों पुत्रों उ. मुसाहिब अली खां और उ. सादिक अली खां को रुद्रवीणा वादन की उच्चस्तरीय शिक्षा अपने वालिद से मिली थी। दोनों ने इसका प्रचार-प्रसार भी खूब किया। मुसाहिब अली खां की संगीत समाज में बहुत प्रतिष्ठा थी किंतु अपने मनमौजी स्वभाव के कारण ये किसी एक स्थान पर बहुत दिन तक टिक कर नहीं रह पाये। राजदरबारों का अनुशासन भी इन्हें पसंद नहीं था और इनका निधन भी जल्द ही 1912 में हो गया। किंतु सादिक अली खां ने संगीत जगत की खूब सेवा की। इन्हें दतिया, झालावाड़, जामनगर और अलवर आदि रियासतों का आश्रय प्राप्त था। ये रामपुर दरबार में भी रहे और देश की आजादी तथा रियासतों की समाप्ति के बाद लखनऊ में भी। विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत सम्मेलनों और आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों से भी इनके कार्यक्रम प्रसारित होते रहते थे।

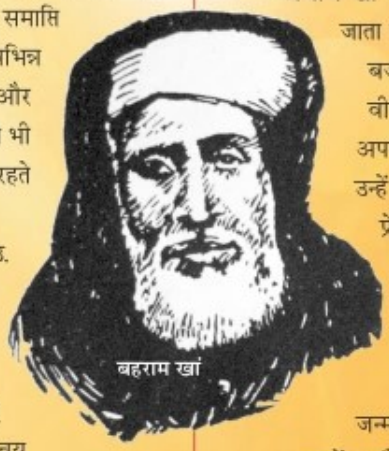
बहराम खां

उ. सादिक अली खां सुपुत्र उ. असद अली खां भी अपने पिता की तरह ही यशस्वी रुद्रवीणा वादक हुए। इन पंक्तियों के लेखक से बातचीत करते हुए उन्होंने अपनी परंपरा का परिचय जयपुर के बीनकार घराने की ग्यारहवीं-बारहवीं पीढ़ी का कहकर दिया था। तब उस्ताद असद अली खां ने खुद को रुद्रवीणा और खंडारवाणी का एकमात्र प्रतिनिधि बताया था। उन्होंने यह भी कहा था कि, '1939 से 1964 तक मेरे पिता रामपुर दरबार में थे और इसी दौरान मेरी शिक्षा-दीक्षा हुई।' उ. असद अली खां को वीणा विशारद, संगीत शिरोमणि, स्वाति तिरुनाल ध्रुवपद सम्मान, साहित्य कला परिषद् सम्मान, तानसेन सम्मान, केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार और पद्मभूषण के अलंकरण जैसे

केसरबाई केरकर

कई मान-सम्मान मिले थे। इन्होंने वीणा की आवाज की मौलिकता को यथावत रखते हुए उसमें कई सुधारात्मक प्रयोग भी किए थे। खां साहब के निधन के बाद इस परम्परा पर एक तरह से विराम सा लग गया है।

राजस्थान में रुद्रवीणा के अलावा अन्य तंत्रवाद्यों के भी कई प्रतिष्ठित संगीतकार हुए हैं। इनमें एक अत्यन्त उल्लेखनीय नाम उ. जमालुद्दीन खां का है जिन्होंने विचित्र वीणा का खूब प्रचार-प्रसार किया। इनके प्रमुख शिष्यों में विचित्र वीणा वादक उ. अब्दुल अजीज खां का नाम बहुत सम्मान से लिया जाता है जिन्होंने 35 वर्षों तक सारंगी बजाने के बाद उसे छोड़कर विचित्र वीणा सीखा और बजाया। इन्होंने अपने शिष्यों की भी सारंगी छुड़ाकर उन्हें भी विचित्र वीणा बजाने के लिये प्रेरित और प्रोत्साहित किया। इनके शिष्य अहमद रजा भी अच्छे बीनकार हुए। ग्वालियर के उ. अमीर खां के सुपुत्र उ. जमालुद्दीन खां का जन्म 1859 में जयपुर में हुआ था। इन्हें बड़ौदा के महाराजा सियाजी राव गायकवाड़ का भी राज्याश्रय प्राप्त था। बड़ौदा की रानी भी इनकी शिष्या थीं। जमालुद्दीन खां का निधन 1929 में हुआ था। जमालुद्दीन खां के छोटे भाई शमसुद्दीन खां ने अपने वालिद से सितार सीखकर खूब नाम कमाया। कई रियासतों में रहते हुए ये बाद में मुंबई में जाकर बस गये। वहीं 1920 में इनका निधन हुआ। उ. जमालुद्दीन खां के सुपुत्र उ. आबिद हुसैन ने विचित्र वीणा वादन और गायन दोनों ही विधाओं में अपनी कला क्षमता का अच्छा परिचय दिया। इनका अधिकांश समय महाराजा बड़ौदा और नवाब जंजीरा के यहां व्यतीत हुआ।

उ. रियाजुद्दीन खां डागर

राजस्थान और जयपुर के संगीतकारों की चर्चा करते समय एक और उल्लेखनीय नाम बार-बार जेहन में उभरता है-जिनका नाम था उस्ताद अमीर बख्श। ये महाराज रामसिंह के दरबार के दरबारी संगीतज्ञ थे। इन्होंनें अपने पिता मदार बख्श से ध्रुवपद की तालीम ली थी। बाद में उ. सगीरुद्दीन खां से भी सीखा। ये सितार वादन में भी निपुण थे ये। इनके शिष्यों में जयपुर के प्रसिद्ध गायक उ. करामत खां का नाम सर्वोपरि है। करामत खां अपने समय में आलाप, ध्रुवपद और धमार गायन में बेजोड़ माने जाते थे। मुंबई के सुप्रसिद्ध गायक उ. विलायत हुसैन खां ने उ. करामत खां से ही सीखा था। उ. अमीर बख्श के एक दूसरे शिष्य नजीर खां ने सितार वादन के क्षेत्र में खूब ख्याति अर्जित की। जयपुर के सुप्रसिद्ध गायक उ. मोहम्मद अली से सीखकर पं. विष्णुनारायण भातखंडे ने अपनी पुस्तकों-क्रमिक पुस्तक मालिका-के विभिन्न भागों में उनकी रचनाओं को लिपिबद्ध किया है। मोहम्मद अली के अन्य प्रमुख शिष्यों में गलते वाले हरिवल्लभ आचार्य और दुर्गा बाई का नाम बहुत सम्मान से लिया जाता है।

ये महाराज रामसिंह के दरबार में नियुक्त थे और इनका देहांत महाराज माधो सिंह के शासनकाल में हुआ। मोहम्मद अली के सुपुत्र और शागिर्द उ. आशिक अली खां भी श्रेष्ठ गायक हुए। ये जयपुर के महाराज माधो सिंह के दरबार में तो रहे ही, रामपुर और किशनगढ़ जैसी रियासतों में भी रहे। इनका निधन 1915 में हुआ था।

राजस्थान एवं जयपुर के गुणी संगीतकारों की चर्चा करते हुए जयपुर के गायक उ. कल्लन खां (आगरा घराना) के नाम को स्मरण करना जरूरी है। इनके पिता घघ्घे खुदाबख्श महाराजा रामसिंह दरबार में थे। कल्लन खां ने जयपुर में रहते हुए जिन शिष्यों को संगीत शिक्षा में पारंगत किया उनकी गायकी में आगरा और जयपुर गायन शैलियों का सम्मिश्रण था। इस तरह हम देखते हैं कि राजस्थान में विभिन्न विधाओं के प्रतिष्ठित संगीतकारों की उपस्थिति सदैव बनी रही। यह परम्परा तब से आज तक चलती आ रही है....अबाध.... अटूट और अनवरत....